हिंदी पत्रकारिता की गौरवशाली यात्रा और बदलते आयाम

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में 30 मई का दिन एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में अंकित है। इसी दिन वर्ष 1826 में हिंदी भाषा के प्रथम समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन आरंभ हुआ था। इस युगांतरकारी घटना की स्मृति में प्रत्येक वर्ष संपूर्ण देश में हिंदी पत्रकारिता दिवस अत्यंत उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिवस अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक जागरूकता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सम्मान प्रकट करने का एक पावन अवसर है। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत विदेशी भाषाओं से हुई थी। उस प्रारंभिक दौर में हिंदी भाषी समाज की समस्याओं और उनके मौलिक विचारों को राष्ट्रीय स्तर पर अभिव्यक्त करने के लिए किसी सशक्त माध्यम का अभाव था।

इस शून्यता को समझते हुए पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने तत्कालीन भारत की राजधानी कोलकाता से उदन्त मार्तण्ड नामक एक साप्ताहिक समाचार पत्र को प्रकाशित करने का दृढ़ संकल्प लिया। इस पत्र का सर्वप्रथम अंक 30 मई 1826 को जनमानस के सम्मुख आया। उस आदि काल में इस पत्र की लगभग 500 प्रतियां मुद्रित की जाती थीं और इसका वितरण प्रत्येक मंगलवार को किया जाता था। अत्यधिक आर्थिक कठिनाइयों और औपनिवेशिक सरकार के असहयोग के कारण इसका नियमित प्रकाशन लंबे समय तक जारी नहीं रह सका, परंतु इस संक्षिप्त प्रयास ने हिंदी पत्रकारिता की एक अत्यंत मजबूत नींव रख दी। राष्ट्रीय अभिलेखागार जैसे संस्थानों में सुरक्षित ऐतिहासिक दस्तावेज हमें आज भी बताते हैं कि किस प्रकार इन शुरुआती पत्रों ने राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया था।

उदन्त मार्तण्ड शब्द का शाब्दिक अर्थ उगता हुआ सूर्य होता है। जिस प्रकार उदित होता हुआ सूर्य सघन अंधकार को नष्ट कर देता है, ठीक उसी प्रकार पत्रकारिता भी समाज में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास और शोषण को उजागर कर चेतना का प्रकाश फैलाती है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के गौरवशाली इतिहास में, विशेष रूप से 1857 की महान क्रांति के समय और उसके पश्चात, हिंदी पत्रकारिता ने विदेशी शासन के विरुद्ध प्रखर जनमत तैयार करने में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाई। मंगल पांडे और वीर कुंवर सिंह जैसे महान राष्ट्रभक्तों के अप्रतिम संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए, देश के विभिन्न हिस्सों से निकलने वाले समाचार पत्रों ने दमनकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। सत्य की राह पर चलने वाले निर्भीक पत्रकारों को बार बार जेल की अमानवीय यातनाएं सहनी पड़ती थीं और भारी आर्थिक दंड भुगतना पड़ता था। इन तमाम कठोर अवरोधों के बावजूद हिंदी पत्रकारिता ने अपने परम कर्तव्य से पीछे हटने से साफ इनकार कर दिया। बाल गंगाधर तिलक और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे तपस्वी पत्रकारों ने पत्रकारिता को राष्ट्रसेवा का एक पवित्र माध्यम बनाया और अपनी निर्भीक कलम से जनता को स्वतंत्रता के प्रति निरंतर जागरूक किया।

हिंदी पत्रकारिता का बहुआयामी विकास कभी भी केवल राजनीतिक विषयों तक ही सीमित नहीं रहा। इसने भारतीय साहित्य, काव्य शास्त्र और विशेषकर दोहा जैसे पारंपरिक छंदों को सहेजने, संस्कृति, ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं, शिक्षा, किसानों की समस्याओं और विभिन्न सामाजिक विसंगतियों जैसे संवेदनशील विषयों को भी राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। अनेक साहित्यकारों ने अपनी कथाओं को प्रकाशन के लिए तैयार करते हुए पत्रकारिता के माध्यम से समाज को एक सकारात्मक दिशा दी। जिस कालखंड में सूचनाएं केवल बड़े शहरों तक सीमित रहती थीं, उस दौर में हिंदी पत्रकारिता ने देश के सुदूर क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ने में मजबूत सेतु का कार्य किया। पर्यावरण के निरंतर गिरते स्तर पर भी इस पत्रकारिता ने कठोर प्रहार किया है। अरावली और छत्तीसगढ़ के जंगलों की अंधाधुंध कटाई और उससे शहरी तापमान पर पड़ने वाले घातक प्रभावों की उत्कृष्ट रिपोर्टिंग ने आम लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत किया है। जंगलों के अनवरत विनाश के कारण उत्पन्न होते इस भीषण संकट को मुख्यधारा की बहस का हिस्सा बनाने में हिंदी पत्रों की भूमिका सदैव सराहनीय रही है।

जैसे जैसे समय का चक्र तेजी से परिवर्तित हुआ, पत्रकारिता के बाह्य और आंतरिक स्वरूप में भी व्यापक बदलाव आते गए। नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों ने पत्रकारिता को अत्यंत तीव्र और व्यापक बना दिया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन और अंतर्जाल के अभूतपूर्व आगमन ने सूचनाओं के प्रसारण की प्रक्रिया को रूपांतरित कर दिया है। इस आधुनिक अंकीय पत्रकारिता के दौर में हिंदी भाषा की वैश्विक पहुंच कई गुना बढ़ चुकी है। आज करोड़ों लोग अपने चलभाष यंत्रों और संगणक के माध्यम से पल पल में हिंदी समाचार पढ़ते और देखते हैं। आर्थिक जगत की जटिल खबरों ने भी इसमें महत्वपूर्ण स्थान पाया है। आज का आम नागरिक प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम और पारस्परिक निधियों में निवेश से जुड़ी सटीक जानकारी के लिए हिंदी वित्तीय पत्रकारिता पर पूरा भरोसा करता है। इस आधुनिक पत्रकारिता के समक्ष वर्तमान समय में कई अत्यंत गंभीर चुनौतियां भी उठ खड़ी हुई हैं। समाचारों को सबसे तेज प्रसारित करने की इस अंधी होड़ में कई बार परम सत्य और प्रामाणिक तथ्यों की अनदेखी होने लगती है। भ्रामक सूचनाओं का तीव्र प्रसार और विभिन्न प्रकार के दबाव वर्तमान पत्रकारिता की सबसे बड़ी कमजोरी बनकर उभरे हैं, जो इसकी विश्वसनीयता को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सर्वसाधारण तक पूर्ण निष्पक्ष जानकारी पहुंचाना है। इसलिए आज इस बात की महती आवश्यकता है कि पत्रकारिता अपनी गंभीर नैतिक जिम्मेदारियों को पुनः समझे। लोकतांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता को न्यायसंगत रूप से चौथा स्तंभ स्वीकार किया गया है। यदि हमारी पत्रकारिता पूरी तरह स्वतंत्र और निर्भीक बनी रहेगी, तभी हमारा लोकतंत्र भी मजबूत रहेगा। एक सच्चा पत्रकार हमेशा समाज के शोषित वर्ग और सत्ता के बीच एक अत्यंत महत्वपूर्ण सेतु की भांति कार्य करता है।

वर्तमान समय में हिंदी पत्रकारिता की सीमाएं केवल भारत तक आबद्ध नहीं रह गई हैं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बसे प्रवासी भारतीय भी आधुनिक संचार माध्यमों से गहराई से जुड़े हुए हैं। अंतर्जाल और अंकीय मंचों ने हिंदी पत्रकारिता को एक विशिष्ट वैश्विक प्रतिष्ठा दिलाई है। अनेक हिंदी समाचार जालस्थल और सामाजिक मंच आज वैश्विक स्तर पर करोड़ों लोगों तक अपनी पहुंच बना चुके हैं। इसके अतिरिक्त, इस विराट क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी भी बहुत तेजी से बढ़ी है। अनेक साहसी महिला पत्रकार राजनीति, अपराध और पर्यावरण जैसे जटिल मुद्दों पर निष्पक्ष समाचार संकलन कर रही हैं। हिंदी पत्रकारिता दिवस केवल अतीत की स्मृतियों को याद करने का अवसर नहीं है, बल्कि भविष्य के निर्माण के प्रति संकल्प लेने का महापर्व भी है। हमें एक ऐसी सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देना होगा जो समाज में आपसी सौहार्द और रचनात्मक परिवर्तन ला सके। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग करते हुए सत्य और सामाजिक जिम्मेदारी को सर्वोपरि महत्व दिया जाना चाहिए। एक सच्चा पत्रकार वही है जो विपरीत परिस्थितियों में भी निष्पक्ष बना रहे। उदन्त मार्तण्ड से आरंभ हुई यह यात्रा आज एक विराट वटवृक्ष का रूप ले चुकी है, जो हमें यह निरंतर संदेश देती है कि कलम की शक्ति संसार की किसी भी अन्य शक्ति से अनंत गुना प्रभावशाली होती है।

▶ **महेन्द्र तिवारी**

एचडीएफसी कैपिटल एडवाइजर्स के साथ मिलाया हाथ

डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान ने भारत में किया पहला रियल एस्टेट निवेश

29 मई, 2026 : जापान के 'डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान' (ष्ठक्चछ्व) ने भारत के रियल एस्टेट सेक्टर में अपना पहला निवेश किया है। बैंक ने अपना पैसा 'एचडीएफसी कैपिटल डेवलपमेंट ऑफ रियल एस्टेट अफोर्डेबल एंड मिड-इनकम फंड' (एच-ड्रीम फंड) में लगाने का फैसला किया है। इस फंड का संचालन एचडीएफसी ग्रुप की कंपनी एचडीएफसी कैपिटल एडवाइजर्स लिमिटेड करती है।

एचडीएफसी कैपिटल भारत के सबसे बड़े रियल एस्टेट फंड्स में से एक है, जो अफोर्डेबल और मिड-इनकम हाउसिंग प्रोजेक्ट्स पर फोकस करता है। कंपनी के सभी फंड्स मिलाकर 4.5 अरब डॉलर से ज्यादा का प्लेटफॉर्म तैयार करते हैं। एच-ड्रीम फंड का लक्ष्य 50 करोड़ डॉलर जुटाने का है, जिसमें अतिरिक्त 50 करोड़ डॉलर का ग्रीनशू ऑप्शन भी रखा गया है। फिलहाल इस फंड को निवेशकों से 35 करोड़ डॉलर से ज्यादा की कमिटमेंट मिल चुकी है। एच-ड्रीम फंड में डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान का निवेश उसकी अंतरराष्ट्रीय निवेश रणनीति में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। एच-ड्रीम फंड दुनिया के शुरुआती रियल एस्टेट फंड्स में शामिल है, जो ग्रीन, अफोर्डेबल और मिड-इनकम हाउसिंग प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा देता है।

यह फंड ऐसे हाउसिंग प्रोजेक्ट्स में निवेश करता है, जो अफोर्डेबल और मिड-इनकम घरों पर फोकस करते हैं। साथ ही, इन प्रोजेक्ट्स में घरों को इस तरह डिजाइन करते हैं जिससे बिजली और पानी की बचत हो (ईडीजीई यानी श्वष्ठत्रश्व फ्रेमवर्क), जो कि पर्यावरण सुरक्षा के वैश्विक मानकों के अनुरूप है।

एचडीएफसी कैपिटल के नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन दीपक पारेख ने कहा कि, 'भारत और जापान के बीच भरोसेमंद साझेदारी है, जो मजबूत संस्थागत सहयोग पर आधारित है। भारत के फाइनेंशियल और रियल एस्टेट सेक्टर में जापानी निवेशकों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। सरकारी स्वामित्व वाले संस्थान डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान का भारत के रियल एस्टेट सेक्टर में यह पहला निवेश हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है और यह देश में लंबे समय के निवेशकों के भरोसे को और मजबूत करता है।'

डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान का मानना है कि इस निवेश के जरिए वह भारत के रियल एस्टेट बाजार के टिकाऊ विकास को समर्थन देगा, जहां हाउसिंग की कमी एक बड़ी चुनौती है। साथ ही, बैंक भारत जैसे तेजी से बढ़ते बाजार में निवेश के अवसर हासिल करेगा और अपने विदेशी रियल एस्टेट पोर्टफोलियो में भौगोलिक विविधता भी बढ़ाएगा। एचडीएफसी कैपिटल के सीईओ विपुल रूंगटा ने कहा कि, 'हमें खुशी है कि डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान ने भारत में अपने पहले रियल एस्टेट निवेश के लिए हमारे साथ साझेदारी की है। एचडीएफसी कैपिटल की रणनीति शुरुआती चरण में क्वालिटी अफोर्डेबल और मिड-इनकम हाउसिंग प्रोजेक्ट्स को फाइनेंस करने पर केंद्रित है, जिससे लगातार विकास और डाइवर्सिफाइड निवेश में रुचि रखने वाले निवेशकों के साथ हमारी भागीदारी और मजबूत होगी।

डेवलपमेंट बैंक ऑफ जापान का यह निवेश एच-ड्रीम फंड में एचडीएफसी कैपिटल के ऑफशोर फीडर फंड स्ट्रक्चर के जरिए किया गया है। यह स्ट्रक्चर इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विसेज सेंटर्स अथॉरिटी (द्बस्नस्ष्ट) के तहत गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) में बनाया गया है, जो भारत का इंटरनेशनल फाइनेंशियल सेंटर है। एच-ड्रीम फंड में आईएफसी के ई एंड एस परफॉर्मेंस स्टैंडर्ड और ईडीजीई ग्रीन बिल्डिंग फ्रेमवर्क को अपनाया गया है, ताकि हर प्रोजेक्ट में सस्टेनेबिलिटी को प्राथमिकता दी जा सके।

दुश्मनी जमकर करो लेकिन...

सैयद मोहम्मद बशीर जो बाद में बशीर बद्र के नाम से मशहूर हुए तो कह उठे कि..

उजाले अपनी यादों के
हमारे साथ रहने दों,
न जाने किस गली में
जिंदगी की शाम हो जाए।।

और गत अठाईस मई को भोपाल में तमाम यादों,अनुभवों के संग शाम हो गई।क्योंकि बशीर ने जिंदगी के तमाम उतार चढ़ाव देखे,संघर्ष किए और दंगों को भी भुगता,न केवल भुगता बल्कि कहा कि:-

लोग टूट जाते हैं एक
घर बनाने में,
तुम तरस नहीं खाते
बस्तियां जलाने में।।

और यकीन मानिए आज भी वैसा ही हो रहा है पर किसे फिक्र हैं क्योंकि जब इंसान बंट जाता है तब वह इंसान नहीं रहता बल्कि जहरीला सांप हो जाता है बस खोल ही इंसान का होता है?पन्द्रह फरवरी उन्नीस सौ तीस में जन्में बशीर ने पीएचडी तक शिक्षा प्राप्त की और मेरठ कालेज में लंबे समय तक प्रोफ़ेसर रहे पर उन्नीस सौ सतासी में मेरठ छोड़ना पड़ा और भोपाल आकर बस गए और रचनाधर्मिता में ऐसे तल्लीन हुए कि उन्होंने ग़ज़ल को 'मीर' और 'गालिब' के पारंपरिक ढर्रे से न केवल निकाला बल्कि वर्तमान दौर के शायरों के लिए नई ताबीर भी लिखी,तभी तो उन्हें 'पदम श्री' और 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से नवाजा गया क्योंकि बशीर की शाइरी का मिजाज आम आदमी की हालातों से गुजरता है कि:--

कोई हाथ भी न मिलाएगा
जो गले मिलोगे तपाक से,
ये नए मिजाज का शहर है
जरा फासले से मिला करो।

और यकीन मानिए ऐसा ही हो रहा है आजकल पूरी दुनिया में,,यही एक शाइर की खूबी होती है कि वो समय की नब्ज पकड़कर लिखता है और ऐसा लिखता है कि जब भी पढ़ो,वो नया लगता है।उनकी शाइरी में सादगी,तल्खी और मुहब्बत का जो संगम था,वो विरल है।उनकी शाइरी की एक खास बात यह भी रही कि बशीर साहब ने कठिन लफ्जों के जाल से मुक्त होकर आम बोलचाल की भाषा को उर्दू जुबान दी और शायद यही वजह है कि उनके कलाम हर खास-ओ-आम की जुबान पर आ जाते हैं कि:-

आखिर कुछ तो
मजबूरियाँ ही होंगी,
वरना यों ही कोई
बेवफा नहीं होता।

यह शेर न जाने कितने आयाम खोलता है।आम बात से लेकर महबूब तक और तमाम चीजों को खोल देता है।उनका एक शेर जो आज के हालातों पर भी खरा उतरता है कि:--

जी बहुत चाहता है सच बोलें,
क्या करें होंसला नहीं होता।

है ना गजब कितनी सरलता से कितनी बड़ी बात कहने में सफल हो गए बशीर साहब।यही कमाल था बशीर बद्र जी का।बशीर के अवसान के बाद जो वर्तमान दौर है कि सोशल मीडिया का,डिजिटल दुनिया का,जिसमें आए दिन हजारों कवि/शायर जन्म ले रहे हैं,उस दौर में यह बात हर शायर/कवि को अपने जेहन में बिठा लेनी चाहिए कि एक सच्चे रचनाकार का काम सिर्फ मुहब्बत की बातें करना नहीं होता बल्कि अपने समय की राजनीति और समाज के दोगलेपन पर सवाल उठाना भी होता है और अगर ऐसा नहीं कर रहे तो फिर शाइरी छोड़ दीजिए,कुछ और काम करिए।क्योंकि यह बशीर ही कहने की हिमाकत मर सकते हैं कि:--

जीभ पर सुखी हुई गालियाँ
अच्छी नहीं।
कुर्सियों पर बैठकर
गालियाँ अच्छी नहीं।

और आज यही तो हो रहा है।एक और शेर देखिएगा कि:--

दुश्मनी जमकर करो
लेकिन यह गुंजाइश रहे।
जब कभी हम दोस्त हों
जाएं तो शर्मिंदा न हों।।

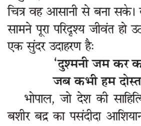

बकौल बशीर बद्र एक शायर/कवि को सदा अपनी रीढ़ मजबूत रखनी चाहिए,उसे सत्ता के सामने झुकने की बजाय अपनी कलम की खुद्दारी को जिंदा रखना चाहिए।तभी तो बशीर यह कह पाए कि:--

मुसाफिर के रास्ते बदलते रहे,
मगर हम तो अपनी डगर
चलते रहे।।

इतना ही नहीं:---

शौहरत की धूप आते
ही साये सिमट गए।
हम ढलती शाम तक
इसी दीवार के रहे।

बेशक बशीर साहब का फिल्मी सफर बहुत लंबा नहीं रहा क्योंकि बशीर अपनी शर्तों पर लिखने वाले शायर थे मगर फिर भी वॉलीवुड उनकी ग़ज़लियत का मुरीद रहा और जगजीत सिंह,पंकज उधास और गुलाम अली जैसे ग़ज़ल गायकों ने उनकी गज़लों को आवाज दी।आज बशीर नहीं रहे पर उनकी यह शाइरी सदियों तक गूंजती रहेगी कि:---

सात संदूकों में भरकर
दफ्न कर दो नफ़रतें।
आज इंसाँ को मुहब्बत
की जरूरत बहुत है।।

अलविदा बशीर साहब।तुम शाइरी में हमेशा जिंदा रहोगे।

▶ **कृष्ण कुमार निर्माण**
करनाल,हरियाणा
9034875740

हिंदुस्तानी जुबान के मसीहा : डॉ. बशीर बद्र का साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

प्रख्यात शायर डॉ. बशीर बद्र साहब के इंतकाल पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। 28 मई 2026 को भोपाल में उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली। उनका जाना उर्दू अदब और भारतीय सांस्कृतिक चेतना के एक युग का अवसान है। उर्दू शायरी को महलों, नवाबों और कठिन शब्दावलियों के दायरे से निकालकर आम आदमी की रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़ने का जो हुनर डॉ. बशीर बद्र के पास था, वह आधुनिक युग में बहुत विरल है। बद्र साहब की शायरी सिर्फ जज्बात का दरिया नहीं है, बल्कि उसमें भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान और सामाजिक चेतना का एक सटीक संतुलन मिलता है।

बशीर बद्र की शायरी का सबसे बड़ा विश्लेषणात्मक पक्ष उनका भाषाई चुनाव था। उन्होंने अरबी और फारसी के भारी-भरकम शब्दों के बजाय हिंदी और उर्दू के मिले-जुले रूप यानी हिंदुस्तानी जुबान को अपनाया। भाषाई सुगमता और सम्प्रेषण के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी संदेश की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह सुनने वाले तक कितनी सहजता से पहुँचता है। बद्र साहब ने इसी न्यूनतम प्रयास और अधिकतम प्रभाव के सिद्धांत पर काम किया। वे कहते हैं:

'कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से,
ये नए मिजाज का शहर है जरा फासले से मिला करो।'

बद्र साहब के शेर इंसानी दिमाग की परतों, रिश्तों के बनते-बिगड़ते समीकरणों और अकेलेपन का गहरा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं। वे इंसानी व्यवहार को बिना किसी लाग-लपेट के सामने रख देते थे। उनके यहाँ उदासी भी है, तो उससे उबरने की अद्भुत जीजीविषा और मानसिक दृढ़ता भी दिखाई देती है। वे जब लिखते हैं:

'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।'

यहाँ वे सीधे तौर पर स्मृति की उस ताकत को रेखांकित करते हैं जो मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी जीने का संबल देती है। इसी तरह मानवीय स्वाभिमान और आंतरिक संघर्ष को बयां करता उनका यह शेर भी गहरा प्रभाव छोड़ता है:

'जी बहुत चाहता है सच बोलें,
क्या करें हौसला नहीं होता।'

एक शिक्षाविद होने के नाते उनका दृष्टिकोण बेहद तार्किक और प्रगतिशील था। मेरठ के दंगों में जब उनका घर जला दिया गया, तो उस त्रासदी को उन्होंने नफरत के बजाय एक बड़े सामाजिक संदेश में बदल दिया। यह उनके भीतर के एक परिपक्व और संतुलित विचारक को दर्शाता है। वे लिखते हैं:

'लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में,
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में।'

इसके साथ ही, बद्र साहब की शायरी में धूप, बारिश, आँगन, चिराग, किताब और छत जैसे दृश्य-बिम्ब कूट-कूट कर भरे हैं। विज्ञान के अनुसार, मस्तिष्क उन बातों को जल्दी और देर तक ग्रहण करता है जिनके चित्र वह आसानी से बना सके। बशीर साहब की शायरी पढ़ते ही आँखों के सामने पूरा परिदृश्य जीवंत हो उठता है। उनकी गजल का यह शेर इसी का एक सुंदर उदाहरण है:

'दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त हो जाएं तो शर्मिंदा न हों।'

भोपाल, जो देश की साहित्यिक और सांस्कृतिक धड़कन रहा है, डॉ. बशीर बद्र का पसंदीदा आशियाना बना। उनके देहावसान के साथ ही उर्दू गजल का वह चमकता सितारा अस्त हो गया जिसने गजल को राजदरबारों से निकालकर अवाम की महफिलों और गलियों तक पहुँचाया था। बद्र साहब आज शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जब भी दुनिया में मोहब्बत, तन्हाई, वफ़ा और इंसानी गरिमा की बात होगी, उनके शेर इंसानी चेतना को आलोकित करते रहेंगे।

'जमीन की कोख में सदियाँ बिताना पड़ती हैं,
तब एक फूल सा चेहरा खिल कर आता है।'

उन्हें हमारी भावभीनी और मौन श्रद्धांजलि।

▶ **डॉ मंगलेश जायसवाल,**
कालापीपल,9926034568